शोधार्थी-वेदप्रकाश सिंह
शोध निर्देशक-डॉ. नीरज कुमार
हिंदी विभाग

हिंदी कहानी पर भूमंडलीकरण की संस्कृति के प्रभाव का अध्ययन (1990 से 2005 तक)

भूमंडलीकरण अर्थशास्त्र का एक पारिभाषिक शब्द है। जिसका अर्थ व्यापार के लिए पूरे विश्व को नीतिगत बाधाओं और सीमाओं से रहित बना दिया जाना है। यह सीमा रहितता ही भूमंडलीकरण का लक्ष्य है। यह स्थिति उदारीकरण, निजीकरण और संचार-यातायात के विकास तथा एकध्रुवीय विश्व के चलते संभव हुई है। भूमंडलीकरण अब केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। बल्कि व्यक्ति और समाज से संबंधित सभी क्षेत्रों में इसकी मौजूदगी देखी जा सकती है। वह क्षेत्र सामाजिक, राजनीतिक भी है और सांस्कृतिक भी। ग्लोबलाइजेशन अर्थात् भूमंडलीकरण जिसे नव-उपनिवेशवाद, नव-साम्राज्यवाद, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद, अमरीकीकरण अथवा वैश्वीकरण कहा जा रहा है, वह पूँजीवाद के सर्वव्यापीकरण की एक वैश्विक प्रØया है। भूमंडलीकरण की संस्कृति किसे कहते हैं, उसका स्वरूप क्या है, वह समाज को किस तरह प्रभावित कर रही है इसे दिखाने की कोशिश की गयी है। कहना न होगा संस्कृति उसे ही कहेंगे जो सकारात्मक और सर्वोत्तम है। साथ ही वह अन्य संस्कृति के विरोध में न हो। बाज़ारवाद, उपभोक्तावाद, विज्ञापन की संस्कृति, जीवन के हर हिस्से का बाज़ारीकरण, समाज और मानव जीवन में प्रतिस्पर्धा या जो सर्वोत्तम है वही जीवित रह सकता है 'सर्वाइवल आफॅ द फिटेस्ट' के विचार को प्रश्रय देना, वर्तमान भूमंडलीकरण की संस्कृति के अवयव हैं। नागरिक अब उपभोक्ता में बदल गया है। विज्ञापन सच और झूठ के अंतर को खत्म कर रहा है। हिंसा, आक्रामकता, अधिक से अधिक धन पाने की इच्छा किसी भी तरह संस्कृति के भीतर नहीं आ सकते। इसलिए भूमंडलीकरण की ये पहचान हो सकते हैं, संस्कृति नहीं। हिन्दी कहानी पर भूमंडलीकरण की संस्कृति के आर्थिक स्वरूप के प्रभाव के अंतर्गत तीन प्रमुख बिंदुओं की शिनाख्त कर उन पर बात की गयी है। ये तीन बिंदु हैं-बाज़ारवाद और उपभोक्तावाद का प्रभाव, विज्ञापनी संस्कृति का प्रभाव, प्रतिस्पर्धात्मक स्थितियों का प्रभाव। बाज़ारवाद, विज्ञापन और प्रतिस्पर्धा के इस त्रिकोण ने हिंदी कहानी पर अनेक प्रभाव अंकित किए हैं। हिंदी कहानी पर भूमंडलीकरण की संस्कृति के सामाजिक स्वरूप के प्रभाव पर बात की गयी है। नई आर्थिक नीतियों ने जो सामाजिक यथार्थ रचा उसे हम भूमंडलीकरण की संस्कृति के सामाजिक स्वरूप के दायरे में ला सकते हैं। सामाजिक विषमता और शोषण के नए रूप, बदलते जातीय समीकरण, साम्प्रदायिकता और धर्म के नए चेहरे के साथ संबंधहीनता और मूल्यहीनता के प्रसार पर बात की है। बेरोज़गारी हमारे समय का सबसे बड़ा यथार्थ है। पैसे के पीछे अंधी दौड़ में पड़ा मनुष्य, भ्रष्टाचार का बढ़ना, संवेदनशीलता का छीजते जाना भी इसी में शामिल है। हिंदी कहानी पर भूमंडलीकरण की संस्कृति के राजनीतिक स्वरूप के प्रभाव पर बात की गयी है। सरकार 'विकास' के नाम पर विस्थापन, जमीन अधिग्रहण, खेती की बर्बादी, लोगों की बदहाली को ला रही है। यह सब कुछ लोकतंत्र के नाम पर हो रहा है।